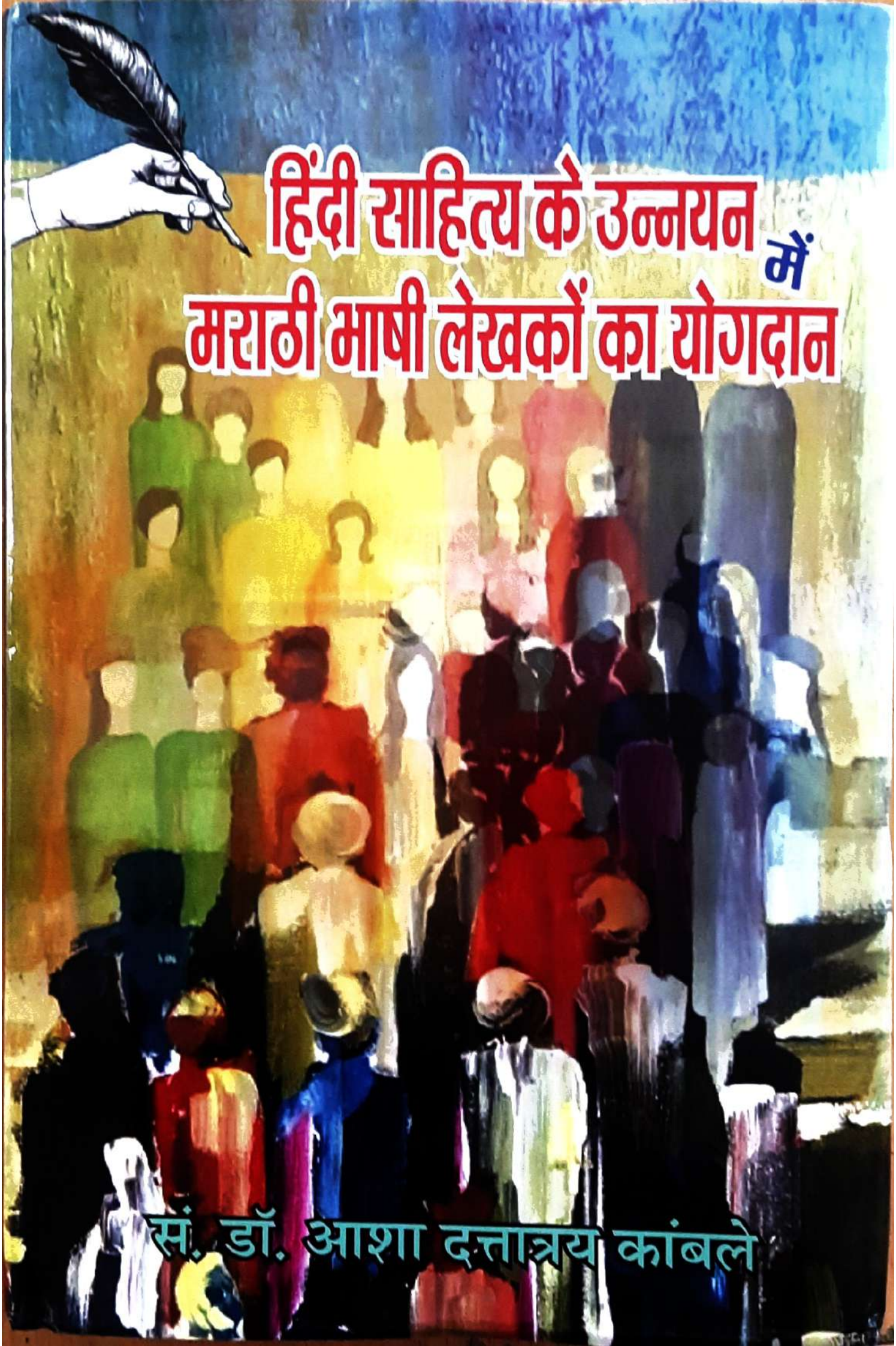
हिंदी साहित्य के उन्नयन में
मराठी भाषी लेखकों का योगदान
सं. डॉ. आशा दत्तात्रय कांबले

अनुक्रम

- प्रो. डॉ. अंबादास देशमुख का हिंदी में योगदान
- व्यक्ति एवं रचनाधर्मिता : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे
- ज्ञानसाधक अध्यापक : डॉ. माधव सोनटक्के
- बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. माधव सोनटक्के सर
- व्यावहारिक समीक्षा में डॉ. चंद्रभानु सोनवणे 'वेदालंकार' का योगदान
- विश्वभाषा हिन्दी के उन्नायक लोकसेवक मधुकरराव चौधरी
- डॉ. दामोदर खडसे के काव्य में चित्रित समाज जीवन
- मालती जोशी का हिंदी साहित्य में योगदान
- हिंदी की स्थापित कथाकार मालती जोशी
- हिंदी साहित्य के विकास में डॉ. मु. ब. शहा का योगदान
- विश्व हिंदी भाषा के उन्नयन में मराठी भाषी हिंदी साहित्यकारों का योगदान : (प्रो. पद्मा पाटील के संदर्भ में)
- अद्‌भुत प्रतिभा की धनी वंदनीय प्रो. डॉ. पद्माजी पाटील
- विश्व हिंदी भाषा उन्नयन में मराठी भाषी प्रो. डा.पद्मा पाटील का योगदान
- पद्मजा घोरपडे सुपरिचित कवयित्री तथा हिंदी मराठी की अनुवादक
- हिंदी साहित्य के उन्नयन में डॉ. सुनील कुलकर्णी का योगदान...
- विश्वभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में डॉ. बापूराव देसाई का योगदान
- हिंदी साहित्य-सर्जक, राष्ट्रभाषा प्रचार-प्रसारक एवं भारतीयता के बहुआयामी अन्वेषक : प्रो. डॉ. शशिकांत सोनवणे 'सावन'
- प्रा. वेदकुमार वेदालंकार - ज्येष्ठ अनुवादक
- अंतरभारती के उपासक : डॉ. सुनील कुमार लवटे
- डॉ. गजानन चव्हाण की साहित्य साधना
- हिन्दी साहित्य के महान व्यंग्यकार डॉ. शंकर पुणतांबेकर
- महाराष्ट्र के हिंदीतर भाषी डॉ. दिलीप पटेल का व्यंग्य साहित्य में योगदान

हिंदी साहित्य के उन्नयन में मराठी भाषी लेखकों का योगदान

संपादिका
डॉ. आशा कांबले

वान्या पब्लिकेशंस
कानपुर - 208021 (उ.प्र.)

ISBN 978-93-90052-66-0
मूल्य : सात सौ पचास रुपये मात्र

पुस्तक	:	**हिंदी साहित्य के उन्नयन में मराठी भाषी लेखकों का योगदान**
संपादिका	:	डॉ. आशा कांबले
©	:	संपादिका
प्रकाशक	:	**वान्या पब्लिकेशंस** 1A/2122 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 208 021 Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	**प्रथम, 2024**
मूल्य	:	**750/-**
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	सार्थक प्रेस, कानपुर

अनुक्रम

1.	प्रो. डॉ. अंबादास देशमुख का हिंदी में योगदान **डॉ. पांडुरंग चिलगर**	15
2.	व्यक्ति एवं रचनाधर्मिता : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे **डॉ. बालाजी गायकवाड**	20
3.	ज्ञानसाधक अध्यापक : डॉ. माधव सोनटक्के **गोविंद बुरसे**	27
4.	बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. माधव सोनटक्के सर **डॉ. रणजीत जाधव**	33
5.	व्यावहारिक समीक्षा में डॉ. चंद्रभानु सोनवणे 'वेदालंकार' का योगदान **डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'**	37
6.	विश्वभाषा हिन्दी के उन्नायक लोकसेवक मधुकरराव चौधरी **प्रो. कल्पना पाटील**	43
7.	डॉ. दामोदर खडसे के काव्य में चित्रित समाज जीवन **डॉ. एन. बी. एकिले**	50
8.	मालती जोशी का हिंदी साहित्य में योगदान **डॉ. सुनीता नारायणराव कावळे**	56
9.	हिंदी की स्थापित कथाकार मालती जोशी **प्रा. दत्तात्रय सोमा धिवरे**	61
10.	हिंदी साहित्य के विकास में डॉ. मु. ब. शहा का योगदान **प्रा. सतीश पाटील**	66
11.	विश्व हिंदी भाषा के उन्नयन में मराठी भाषी हिंदी साहित्यकारों का योगदान : (प्रो. पद्मा पाटील के संदर्भ में) **डॉ. रवीन्द्र भोरे**	71
12.	अद्‌भुत प्रतिभा की धनी वंदनीय प्रो. डॉ. पद्माजी पाटील **डॉ. सविता राजभोज-चोपड़े**	79
13.	विश्व हिंदी भाषा उन्नयन में मराठी भाषी प्रो. डा.पद्मा पाटील का योगदान **डॉ. वंदना पाटील**	86

5

व्यावहारिक समीक्षा में डॉ. चंद्रभानु सोनवणे 'वेदालंकार' का योगदान

डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'

कुंजी–शब्द

आर्य समाज, गुरुकुल कांगड़ी, हैदराबाद मुक्ति संग्राम,मातृभाषा, मराठी, हिंदी भाषा, हिंदी साहित्य, उपन्यास, कहानी, कविता, साहित्य, गजानन माधव 'मुक्तिबोध', भारतेंदु हरिश्चंद्र, धर्मवीर भारती, फणीश्वरनाथ रेणु, यशपाल,राजेंद्र यादव, हिंदी समीक्षा आदि।

गुरुदेव

सुन्दरता अगर शरीर की होती है तो गुरुदेव सुन्दर नहीं हैं।
परन्तु सुन्दरता अगर आतंरिक सजगता का आस्फालन है,
तो गुरुदेव सर्वांग सुन्दर हैं
अस्थिर खोजी आँखों पर स्थिर चश्मा
नुकीली नासिका और ठुड्डी
दुबली–पतली देह
छोटी–सी कदकाठी में महाप्राण ध्वनियों की अनुगूँज
और चाल में त्वरा–
गुरुदेव की चाल झरने–सी है
राहों में अड़ंगों और आडम्बरों को तोड़कर
निश्चल, कण–कण बहता झरना
तटवर्तियों की तटस्थता का सम्मान कर
प्यासों तक पहुँचकर उनकी प्यास बुझाने वाला झरना
निर्मल निर्झर
कहीं कुछ बहकर आ भी गया हो तो वह उसका
अपना नहीं प्रवाह का कि गति का अवदान है
उनके पास तो ऋजुता का वरदान है–
इसके, उसके, सब के लिए
जैसे सत् साहित्य देश कालातीत बनकर

सबका अपना बन जाता है
वैसे हैं गुरुदेव
और उनकी सत्यशील साहित्य साधना
इस साधना के चरणों में
कोटि–कोटि प्रणाम !'

डॉ. रंगनाथ तिवारी

विषय–प्रवेश

इन दिनों हैदराबाद स्वाधीनता संग्राम का अमृत काल, महर्षि दयानंद सरस्वती की जन्म द्विशती और आर्य समाज स्थापना की सार्ध शती के उपक्रम बड़े उत्साह के साथ मनाये जा रहे हैं। महाराष्ट्र के मराठवाडा प्रदेश (पूर्व हैदराबाद संस्थान) में धाराशिव (उस्मानाबाद), लातूर, बीड, परभणी, नांदेड, हिंगोली, जालना और छ. संभाजीनगर (औरंगाबाद) आदि जिलों का समावेश होता है। इस क्षेत्र में आर्य समाज का विशेष प्रभाव रहा है। महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा मुम्बई के काकड़वाडी स्थान में १८७५ में स्थापित आर्य समाज के बाद धारुर (जिला बीड) में दूसरा आर्य समाज सन् १८८२ में ही स्थापित हुआ था। हैदराबाद रियासत में आर्य समाज का कार्य १८८२ से आरम्भ हुआ। किन्तु आर्य समाज का सही अर्थों में इस क्षेत्र में प्रभाव १९३४ से पड़ने लगा। २३ फरवरी १९३७ के दिन हैदराबाद के निजाम के कुशासन और धार्मिक उन्मादके विरोध में पहला बलिदान हुतात्मा वेदप्रकाश आर्य जी (गुंजोटी, तहसील उमरगा, जिला धाराशिव) का हुआ।

इस क्षेत्र के लोगों ने अपने पुत्र–पुत्रियों को आर्य समाजी संस्कारों में ढालने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) भेजा। गुरुकुल में वैदिक आर्य संस्कारों में पले–बढ़े इन स्नातकों ने आगे चल कर हिंदी साहित्य, समीक्षा, अनुवाद और प्रशासन में बहुत बड़ा योगदान किया है। डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे, डॉ. भगतसिंह राजुरकर, प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार, डॉ. कुशलदेव कापसे, डॉ. भूदेव पाटील, डॉ. चंद्रदेव कवडे प्रा. ओमप्रकाश होळीकर, आदि के नाम यहाँ उल्लेखनीय हैं।

डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे जी का संक्षिप्त परिचय

डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे जी का जन्म दि. ४ मार्च १९३१ के दिन लातूर (तत्कालीन धाराशिव) जिले के औसा तहसील में स्थित मोगरगा नामक गाँव के किसान परिवार में हुआ। आपके पिता का नाम सीताराम और माता का नाम पार्वतीवाई था। आपने सन् १९५२ में गुरुकुल कांगड़ी से वेदालंकार उपाधि प्राप्त की, सन् १९५४ में आगरा विश्वविद्यालय से हिंदी की स्नातक स्नातकोत्तर उपाधि

प्राप्त की। इसके उपरांत सन् १९५५ से आपने सोलापुर के डी.ए.वी. संस्था केदयानंद महाविद्यालय में अध्यापन का कार्य आरम्भ किया। बाद में १९७२ में लातूर के दयानंद महाविद्यालय में स्नातकोत्तर हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में अध्यापन कार्य किया।

अध्यापन कार्य करते–करते आपने शोध कार्य में गहरी रुचि दिखाते हुए शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर से डॉ. भगवानदास तिवारी जी के मार्गदर्शन में 'आर्य समाज का हिंदी गद्य साहित्य' विषय पर सन् १९७४ में पी–एच.डी. उपाधि प्राप्त की। इसके उपरांत आप १९७७ में मराठवाडा विश्वविद्यालय (डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय) औरंगाबाद (छत्रपति सम्भाजीनगर) में प्रपाठक के रूप में सेवाएँ प्रदान की। शोध निर्देशक के रूप में आपने डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे जी (विभाजन और हिंदी कथा साहित्य)[२], डॉ. बलभीमराज गोरे जी (हिंदी अध्ययन : स्वरूप और समस्याएँ)[३], डॉ. एहसानुल्ला कादरी जी (गेसूदराजः व्यक्तित्व एवं कृतित्व)[४], डॉ. अनिता पटेल–राजुरकर जी (कथाकार मन्नू भंडारी)[५], डॉ. पंडितराव थिगळे जी (स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में पारिवारिक विघटन)[६], डॉ. शकुन्तला पाटील जी (यशपाल और उनका साहित्य रू कामचेतना के सन्दर्भ में)[७], डॉ. नामदेव उतकर जी (आठवें दशक की हिंदी कविता में सामाजिक बोध)[८], डॉ. रामकुमार द्विवेदी जी(आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का ललित साहित्य)[९], डॉ. ओमप्रकाश नायर जी (कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर : व्यक्तित्व और कृतित्व)[१०] जैसे प्रख्यात अध्यापकों का मार्गदर्शन किया।

डॉ. चंद्रभानु सोनवणे की मातृभाषा मराठी थी, किंतु उनकी समस्त शिक्षा उस गुरुकुल कांगड़ी में हुई, जहाँ का वातावरण हिंदी युक्त था और शिक्षा का माध्यम संस्कृत भाषा थी। इस कारण मातृभाषा मराठी के साथ–साथ हिंदी और संस्कृत भाषा व साहित्य की परंपरा का ठीक वैसा ही अध्ययन करने का सुअवसर आपको प्राप्त हुआ जैसा कि उस काल के किसी हिंदी भाषी व्यक्ति को प्राप्त हो सकता था। आपकी रुचि जहाँ प्राचीन साहित्य में रही, वही सामायिक साहित्य को भी परखने–मूल्यांकित करने में आप समर्थ थे। आप आर्य समाजी दर्शन से गहन रूप में प्रभावित थे। आपके व्यक्तित्व में एक विशिष्ट प्रकार का लचीलापन विद्यमान था अध्ययनशीलता व मननशीलता की निरंतरता के कारण ही आप स्थापित मान्यताओं को चुनौती देने में समर्थ हुए। इसी प्रवृत्ति के कारण समीक्षालोक बहुआयामी बन पाया है।

डॉ. चंद्रभानू सोनवणे के व्यावहारिक समीक्षा ग्रंथ

१. 'विपात्र' : एक सृजनात्मक उपलब्धि
२. भारतेंदु के विचार : एक पुनर्विचार

३. धर्मवीर भारती का साहित्य : सृजन के विविध रंग
४. कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु
५. यशपाल की कहानियाँ : कथ्य और शिल्प
६. कथाकार राजेंद्र यादव

१. 'विपात्र' : एक सृजनात्मक उपलब्धि [११]

डॉ. चंद्रभानु सोनवणे रचित विख्यात कवि एवं गद्यकार गजानन माधव कुलकर्णी 'मुक्तिबोध' के 'विपात्र' पर आपका ग्रंथ आधुनिक प्रगतिशील, संवेदनशील व्यक्ति की पीड़ा को व्यक्त करनेवाली औपन्यासिक रचना है। इसमें डॉ. चंद्रभानु सोनवणे की समीक्षा दृष्टि ने कृति के आंतरिक मर्म को, उपन्यास में व्यक्त लेखकीय पीड़ा–संवेदना को समझने का उस पर समीक्षा करने में जो दृष्टि दिखाई है, वह निश्चय ही सराहनीय है। लेखक ने इस उपन्यास के आधार पर यही स्पष्ट किया है कि वर्गगत विषमता से पीड़ित समाज में आत्मीय संबंधों को स्थापित करने के लिए आवश्यक सच्चा और सही व्यक्ति–स्वातंत्र्य न होने के कारण शोषित व्यक्ति वेदना की अधिकता के कारण आत्मबद्ध हो जाता है।

२. भारतेंदु के विचार : एक पुनर्विचार[१२]

डॉ. चंद्रभानु सोनवणे द्वारा रचित 'भारतेंदु के विचार : एक पुनर्विचार' एक महान उपलब्धि है। भारतेंदु हरिश्चंद्र आधुनिक युग के प्रथम चरण अर्थात् पुनर्जागरण काल के महत्त्वपूर्ण रचनाकार हैं। उनके साहित्यिक योगदान की इतिहास ग्रंथों और समीक्षा विश्व में भूरि–भूरि प्रशंसा ही पाई जाती है। डॉ. चंद्रभानु सोनवणे ने वस्तुनिष्ठ रूप में भारतेंदु के साहित्य का अवलोकन किया और नीर–क्षीर विवेक से उनकी सीमाओं व विशेषताओं का निरूपण किया। उनके विचार से राजनीतिक विचारधारा की दृष्टि से उनके विचार प्रगतिशील अवश्य हैं, परन्तु क्रांतिकारी नहीं है। धार्मिक दृष्टि से वे ज्ञाननिष्ठ धर्म सुधारक नहीं कहे जा सकते। शिक्षा एवं भाषा विषयक विचारधारा की दृष्टि से उन्होंने निर्विवाद युग प्रवर्तक का कार्य किया है। डॉ. चंद्रभानु सोनवणे का यह ग्रंथ आकार में भले ही छोटा हो, पर नए दृष्टिकोण को समर्थ रूप में प्रस्तुत करने वाले ग्रंथ के रूप में ही इस ग्रंथ को देखा जा सकता है। इस ग्रंथ की एक और विशेषता यह है कि, वैचारिक धरातल पर भारतेंदु हरिश्चंद्र और महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जो हमें एक नई दृ ष्टि से भारतेंदु पर विचार करने के लिए प्रवृत्त करता है। भले ही यह ग्रंथ आकार में छोटा लगता हो, पर डॉ. चंद्रभानु सोनवणे की अन्वेषी दृष्टि का पूरा परिचय इस ग्रंथ में प्राप्त होता है।

३. धर्मवीर भारती का साहित्य : सृजनके विविध रंग[१३]

इसी तरह हिंदी के लिए डॉ. चंद्रभानु सोनवणे रचित एक अन्य कृति

'धर्मवीर भारती : सृजन के विविध रंग' का महत्त्व इसलिए भी है कि डॉ. चंद्रभानु सोनवणे की अधिकांश समीक्षा कृतियाँ कथात्मक साहित्य से संबंधित हैं, जबकि इस कृति में भारती के कवि रूप को भी देखने–परखने व मूल्यांकित करने का प्रयास किया गया है। भारती की ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष, कनुप्रिया और अंधायुग इन काव्य कृतियों की जिस विस्तार व सूक्ष्मता के साथ डॉ. चंद्रभानु सोनवणे ने समीक्षा की है, वह इसी का प्रमाण है कि डॉ. चंद्रभानु सोनवणे कविता के क्षेत्र में भी उतनी रुचि रखते हैं, जितनी गद्य साहित्य में।

४. कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु

कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु पर डॉ. चंद्रभानु सोनवणेने जो ग्रंथ लिखा है, सर्वप्रथम उसमें आपने आँचलिकता को परखने का प्रयास किया है और उसी परिप्रेक्ष्य में मनोविज्ञान का सहारा लेकर रेणु के समस्त रचना–संसार को परिभाषित करने का प्रयास किया है।

५. यशपाल की कहानियाँ : कथ्य और शिल्प

डॉ. चंद्रभानु सोनवणे ने पहली बार हिंदी समीक्षा जगत में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से यशपाल की कहानियों का इस ग्रंथ में मूल्यांकन किया है। इसी प्रकार यशपाल की कहानियाँ कथ्य और शिल्प में डॉ. सोनवणे ने इसे प्रमाणित करने का सफल प्रयास किया है। मात्र मार्क्सवादी दृष्टिकोण से इस रचनाकार को परखना ठीक नहीं है।

६. कथाकार राजेंद्र यादव

कथाकार राजेंद्र यादव पर समग्र रूप में हिंदी समीक्षा जगत ने विचार नहीं किया था। डॉ. सोनवणे ने इसे जाना व कथाकार राजेंद्र यादव के सभी उपन्यासों व कहानियों पर कथाकार राजेंद्र यादव पर विचार किया। समीक्षा क्षेत्र ने कथाकार राजेंद्र यादव की वास्तव में अवहेलना ही की थी– डॉ. चंद्रभानु सोनवणे ने वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से राजेंद्र यादव पर विचार कर इस कथाकार को प्रतिष्ठित करने का ही प्रयास किया है। डॉ. चंद्रभानु सोनवणे का कोई भी समीक्षा ग्रंथ ऐसा नहीं है, जो स्थापित मान्यता का पुनरुच्चार कर रहा हो। वास्तव में आपने उन्हीं रचनाकारों पर लिखना पसंद किया जिन पर अब तक या तो लिखा ही नहीं गया है या लिखा भी गया हो, तो एकांगी दृष्टिकोण से। डॉ. चंद्रभानु सोनवणे के प्रायः सभी समीक्षा ग्रंथ उन रचनाकारों पर लिखे गये हैं, जिन पर या तो लिखा नहीं गया पूर्वग्रह दूषित दृष्टिकोण से उन पर समीक्षा की गई है।

उपर्युक्त छह ग्रंथों के अतिरिक्त भी डॉ. चंद्रभानु सोनवणे ने 'हिंदी उपन्यास : विविध आयाम' (सहलेखक डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे और प्रा. ओमप्रकाश होळीकर), 'कहानीकार अज्ञेय : सन्दर्भ और प्रवृत्ति' (सहलेखक डॉ. सूर्यनारायण

रणसुभे), 'साहित्यशास्त्र', 'अवतरण : शोधतंत्र के सन्दर्भ में' और 'आर्य समाज का हिंदी गद्य साहित्य' (शोधग्रंथ) भी अत्यंत महत्वपूर्ण समीक्षा ग्रन्थ हैं।

संक्षेप में कहा जाये तो मराठवाडा के गिने–चुने व्यावहारिक समीक्षकों में डॉ. चंद्रभानु सोनवणे का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाना चाहिए।

सन्दर्भ

१. डॉ. चंद्रभानु सोनवणे जी का हिंदी भाषा तथा साहित्य को योगदान – डॉ. शोभा हहनवते, पृष्ठ ४८–४९ (अतुल प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण २००९)
२. हिंदी शोध सन्दर्भ– सं. डॉ. पांडुरंग पाटील, महाराष्ट्र हिंदी परिषद्, कोल्हापुर, पृ. २२७
३. वही, पृ. २६०
४. वही, पृ. २६७
५. वही, पृ. २२८
६. वही, पृ. २४५
७. वही, पृ. २६१
८. हिंदी शोध सन्दर्भ– सं. डॉ. पांडुरंग पाटील, महाराष्ट्र हिंदी परिषद्, कोल्हापुर, पृ. २१९
९. वही, पृ. २६५
१०. वही, पृ. २६३
११. 'विपात्र' : एक सृजनात्मक उपलब्ध (मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद १९७६)
१२. भारतेंदु के विचार : एक पुनर्विचार (पंचशील प्रकाशन, जयपुर १९७७)
१३. धर्मवीर भारती का साहित्य : सृजन के विविध रंग (पंचशील प्रकाशन, जयपुर १९७९)
१४. कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु (पंचशील प्रकाशन, जयपुर १९७९)
१५. यशपाल की कहानियाँ : कथ्य और शिल्प (पंचशील प्रकाशन, जयपुर १९८०)
१६. कथाकार राजेंद्र यादव (पंचशील प्रकाशन, जयपुर १९८२)
१७. हिंदी उपन्यास : विविध आयाम (पुस्तक संस्थान, कानपुर १९७७)
१८. कहानीकार अज्ञेय : सन्दर्भ और प्रवृत्ति (विकास प्रकाशन, कानपुर १९९४)
१९. साहित्यशास्त्र (आलोक प्रकाशन, औरंगाबाद १९७७)
२०. अवतरण : शोधतंत्र के सन्दर्भ में (आलोक प्रकाशन, औरंगाबाद १९९०)
२१. आर्य समाज का हिंदी गद्य साहित्य (ग्रंथम प्रकाशन, कानपुर १९७५)

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय,
धाराशिव (उस्मानाबाद)

- हिंदी भाषा के उन्नयन में कवि दामोदर मोरे का योगदान
- हिंदी गजल विधा के समीक्षक डॉ. मधु खराटे जी का योगदान
- डॉ. मनोज सोनकर के साहित्य में सामाजिकता
- सुरेश नारायण कुसुंबीवाल के काव्य में व्यक्त संवेदना
- डॉ. उर्मिला पाटील का हिन्दी साहित्य में योगदान
- हिंदी भाषा के उन्नयन में डॉ. सुभाष महाले जी का योगदान
- हिंदी भाषा के विकास में डॉ. अभयकुमार खैरनार का योगदान
- बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी : प्रो. (डॉ.) अर्जुन चव्हाण
- समीक्षा की समीक्षक रमा बुलबुले-नवले...
- डॉ. सतीश यादव का रचनाकर्म
- हिंदी आलोचना को नई दिशा देनेवाले मराठी भाषी आलोचक डॉ. रणजीत जाधव
- डॉ. दीपक पाटील का हिन्दी भाषा के विकास में योगदान
- आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का वास्तव : एक और द्रोणाचार्य
- फिल्म दिग्दर्शक, निर्माता एवं लेखक आशुतोष गोवारिकर का हिंदी विकास में योगदान
- गुणाकार मुले का हिंदी प्रचार प्रसार में योगदान

नाम : डॉ. कांबळे आशा दत्तात्रय (प्रोफेसर)

जन्म : 18 जून 1974

शिक्षा : एम.ए. (दयानंद महाविद्यालय लातूर)
पी–एच.डी. (डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय औरंगाबाद)

प्रकाशित कृतियाँ

- कृष्णा सोबती के कथात्मक साहित्य में नारी पात्र
- समय सरगम उपन्यास का तात्विक विवेचन
- साहित्यिक धरातल पर दलितों की अनुभूतियाँ
- राष्ट्रीय, अतंरराष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में 36 शोधालेख प्रकाशित

संप्रति : एस.एस.व्ही.पी.एस. कला, वाणिज्य तथा विज्ञान महाविद्यालय–शिदंखेडा, जिला– धुलिया (महाराष्ट्र) में सन् 1999 से अध्यापन कार्य में सेवारत.

पुरस्कार : संथागार राष्ट्रीय पुरस्कार 2019, हिंदी अध्यापन सेवा कार्य पुरस्कार 2021, राज्यस्तरीय गुणवंत शिक्षक गुरू गौरव पुरस्कार 2022, जागतिक महिला दिवस महिला रत्न पुरस्कार 2023, शोधनिर्देशक कवयित्री बहिणाबाई चौधरी उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय जलगाँव

पता : प्रतिक्षा निवास अजय नगर प्लॉट नं. 26 नगावबारी
देवपूर–धुलिया (महाराष्ट्र)

ईमेल : ashakamble99@gmail.com

वान्या पब्लिकेशंस

1ए/2122 आवास विकास, हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर-208021

9450889601, 7309038401

vanyapublicationskanpur@gmail.com
info@vanyapublications.com

www.vanyapublications.com

₹750/-

ISBN 978-93-90052-66-0

9 789390 052660

rudra graphics

Also Available at : flipkart amazon